# ।श्री जगदंबा मंत्र।

जय अंबा जय अंबा जय अंबा।
स्वामी बोले बोलके जय अंबा डोले।।
अंबा माता बोले।
बोलके सारे भगत मन ही मन खोले।।
अंबा माई तु ही गुण ज्ञानी।
सारे भक्तों के संकट को मन से ही जानी।।
सिर पे साडे तीन कुंडल नाग के सवारे।
बन के शक्ती सारे प्राणियोंका जीवन सुधारे।।
दुर भगावे दारिद्रय को। ऋण तो समीप न आवे।।
जय जगदंबे तेरी आहट से। खाली भांडार भर जावे।।
छम छम बजाके सुख। तेरे पाछु आवे।।
खोलकर भाग्य का ताला। समृद्धी हाथ पाव पसारे।।
माये जगदंबे तु ही करवीर भोगिनी।।
करवीर वासिनी सोचे।
करवीर वासिनी नाचे।।
करवीर वासिनी बोले।
करवीर वासिनी डोले।।
श्रीरामचंद्र गुण गावे। गाकर माँ को झुलावे।।
झुलाकर वर देवे। माँ तु ही मन मंदीर में समावे।।
श्री परशुराम भुमिको सजावे।
माँ के मंडप की रक्षा करावे।।
वर्षा धुप में छाया धरावे।
बलशाली होने का वर दिलावे।।
गोपालोंका नायक श्रीकृष्ण तुम्हारे भजन करावे।।
भजन से ही जगदंबा वर देवे।
सुखे अकाल में भी अमृत फल दिलावे।।

जय हो जगदंबा, जय हो जगदंबा, जय हा जगदंबा।।
सारे जगत की तुम ही हो अंबा।।
शेष पर बैठी विष्णु के पाव दबाती।
मोहक वाणी करके विष्णु से प्यार सजाती।।
कनक की ढाल लेती, हिरों की तलवार भाती।
सहस्रार सुदर्शन चक्र हाथ में सवारती।।
शंख फुंक के शत्रु को मूरछित करती।
गदा अभिघातेन शत्रु पीडयती।।
हाय हाय करके शत्रु
माँ बचाओ बोतली, माँ माफ करो बोलती।।
भगत को सुखी करती।
पद्म धारण करके, सांज को घर आती।।
धन धान्य हिरे पाचु माणिक मोती।
सदाही सुख समृद्धीका वर्षाव करती।।
गृह से दुःख दारिद्रय ऋण को दुर भगाती।।
हे अंबे तु ही माय।
भगत को सिने से लगाय।।
प्रेम की वर्षा करके।
दिन भगत को झुलाये।।
ॐ अंबा अंबा अंबा अंबा अंबा अंबा अंबा अंबा अंबा।।
पद्म धारिणी, दुःख हारिणी, जगद पालिनी, दारिद्रय नाशिनी।।
सुख झुलाविनी, समृद्धी दायिनी,
परम संतोष कारिणी, शत्रुबुद्धी स्तंभीनी।।
शत्रु वशिकारिणी, महाशत्रु उच्चाटिनी,
विद्वेशिनी, मारिनी, परमौच्चस्थान दायिनी।।
सुप्रसिद्धी दर्शिनी, प्रदायीनी ॐ श्रीम् पद्मावत्यै नमो नमः।।
झुल झुल झुलावे आनंद में झुलावे।।

जैसे मोर नाचे बन में वर्षा की आहट दिलावे।।
वैसे माँ तु ही डोलके धन भांडार खुलावे।।
आठ दिशासे माँ आठ द्वार खोले।।
आदि लक्ष्मी, धैर्य लक्ष्मी,धान्य लक्ष्मी, विजया लक्ष्मी।।
विद्या लक्ष्मी, संतती लक्ष्मी, धन लक्ष्मी, गज लक्ष्मी।।
हे जगदंबा संतप करो दुर कराके अलक्ष्मी।।
टक टक करती दरवाजे को।
समृद्धी से भरती गृह को।।
सदा वास करके भक्त के नसीब में।
यही मन्नत मेरी जानलो जीवन में।।
ॐ श्रीं ह्रीं जगदंबा महालक्ष्मी नमो नमः।।
हरी ॐ तत्सत।